ब्लूम का ज्ञानात्मक क्षेत्र
Cognitive Domain of Bloom

ज्ञानात्मक क्षेत्र में ब्लूम के उद्देश्यों को ज्ञान, बोध, प्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन की श्रेणियों में विभाजित किया है। इनमें ज्ञान, बोध और प्रयोग को निम्न स्तर, विश्लेषण तथा संश्लेषण को मध्यम स्तर तथा मूल्यांकन को उच्च स्तर पर माना गया है।

ये 6 उपभाग मिलकर बौद्धिक क्रियाओं को स्वचालित करते हैं या बनाते हैं। जब एक बार यह क्रिया शुरू हो जाती है, तो इसका पूरा चक्र चलने लगता है।

अंग्रांकित सारणी के माध्यम से इस क्षेत्र का वर्णन किया जा रहा है।

ब्लूम द्वारा विकसित ज्ञानात्मक क्षेत्र का वर्णन

स्तर Level	वर्ग Class	सीखने की उपलब्धियाँ Learning outcomes
निम्न स्तर	ज्ञान (Knowledge)	① विशिष्ट वस्तुओं का ज्ञान ② साधनों का ज्ञान ③ सार्वभौम वस्तुओं का ज्ञान

स्तर Level	वर्ग Class	सीखने की उपलब्धियाँ Learning outcomes
	बोध (Comprehension)	① अनुवाद करना ② व्याख्या करना ③ उल्लेख या बाह्य गणना करना (Extrapolation)
	प्रयोग Application	① नियमों व सिद्धांतों का सामान्यीकरण करना ② निदान (Diagnose) करना ③ पाठ्य-वस्तु का प्रयोग करना
मध्यम स्तर	विश्लेषण Analysis	① तत्वों का विश्लेषण करना ② सम्बन्धों का विश्लेषण करना ③ व्यवस्थित सिद्धांतों का विश्लेषण करना
	संश्लेषण Synthesis	① अद्भुत सम्प्रेषण (Unique Communication) ② योजना बनाना ③ अमूर्त सम्बन्ध खोजना
उच्च स्तर	मूल्यांकन Evaluation	① आन्तरिक साक्षियों द्वारा निर्णय ② बाह्य साक्षियों द्वारा निर्णय

Appointments

आर० सी० ई० एम० कार्यप्रणाली

ब्लूम के ज्ञानात्मक पक्ष के विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन पद को सृजनात्मक उद्देश्य के रूप में डा० दवे ने R.C.E.M. System में रखा है। इस प्रकार से इस System में ब्लूम के 6 वर्गों के स्थान पर केवल चार वर्गों - ज्ञान, बोध, प्रयोग तथा सृजनात्मक में सभी उद्देश्यों को वर्गीकृत किया है।

भावात्मक पक्ष - (Affective Domain)

भावात्मक पक्ष रुचियों, अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा संवेगों से सम्बन्धित उद्देश्यों की व्याख्या करता है।

Bloom महोदय ने इस क्षेत्र को उद्देश्यों को पाँच भागों में विभाजित किया, जिनका संक्षिप्त वर्णन अग्रांकित सारणी के माध्यम से किया जा रहा है।

ब्लूम द्वारा विकसित भावात्मक उद्देश्य क्षेत्र
Affective Domain Developed By Bloom

वर्ग	सीखने की उपलब्धियाँ
① ग्रहण करना Receiving	① सी क्रिया की जागरूकता Awareness of Phenomena

Scanned with CamScanner

Appointments

② क्रिया प्राप्ति की इच्छा
Willingness to receive phenomena

③ नियंत्रित या चयनित योजना
Controlled or selected scheme

② अनुक्रियाँ
Responding

① अनुक्रिया में सहमति
Acquiescence in responding

② अनुक्रियाओं की इच्छा
willingness to respond

③ अनुक्रिया में संतोष
Satisfaction in response

③ अनुमूल्यन
Valuing

① मूल्य स्वीकारना
Acceptance of a value

② मूल्य की प्राथमिकता
Preference for a value

③ वचनबद्धता (Commitment)

④ व्यवस्था
Organization

① मूल्य की अवधारणा
Conceptualization of a value

② मूल्य क्रम की व्यवस्था
organization of a value system

⑤ मूल्य समूह का विशेषीकरण
Characterization of a value complex

① सामान्य समूह
Generalized set

② विशेषीकरण
Characterization

ब्लूम के द्वारा वर्गीकरण के संज्ञानात्मक तथा Scriven के वर्गीकरण संशोधित आधिक उपादेय तथा मान्य जाते है।

क्रियात्मक (मनोगत्यात्मक) उद्देश्य क्षेत्र

Psychomotor objectives Domain

क्रियात्मक (मनोगत्यात्मक) उद्देश्यों का सम्बन्ध छात्रों की शारीरिक क्रियाओं के प्रशिक्षण तथा कौशल के विकास से होता है।

क्रियात्मक पक्ष के प्रमुख स्तर निम्नांकित हैं ① उद्दीपन ② कार्य करना ③ नियंत्रण ④ संयोजन Co-ordination ⑤ स्वाभावीकरण तथा ⑥ आदतों का निर्माण करना।

(E.J. Simpson) ने क्रियात्मक उद्देश्यों को ब्लूम की तरह पांच स्तरों पर बांटा है। जिनका वर्णन निम्न सारणी में किया गया है।

क्रियात्मक (मनोगत्यात्मक) उद्देश्य वर्गीकरण

वर्ग	उपलब्धियाँ
① प्रत्यक्षीकरण Perception	① वर्णनात्मक स्तर ② संक्रमण काल की स्थिति ③ व्याख्यात्मक स्तर
② व्यवस्था Set	① मानसिक स्तर ② शारीरिक स्तर ③ संवेगात्मक स्तर
③ निर्देशात्मक अनुक्रिया Guided Response	① जटिल कौशल वाली ② क्रियाओं पर बल देना
④ कार्य प्रणाली Mechanism	① आत्म विश्वास व कौशल का विकास ② उपयुक्त अनुक्रियाओं में सहायक

Appointments

(5) जटिल प्रत्यक्ष अनुक्रिया
Complex overt response

(1) क्रियात्मक पक्ष का सर्वोच्च स्तर है।
(2) जटिल कार्य करने की क्षमता व कौशल का विकास

Conclusion. हम कह सकते है कि शिक्षा एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया तथा व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में प्राप्त परिणाम भी है। सीखना अर्थात व्यवहार में उत्तरोत्तर व प्रगतिशील परिवर्तन जो बालक में परिपक्वता व स्थिरता का संचार करे। एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया के साथ-2 एक परिणाम भी है, जो बालक के सर्वांगीण विकास, समाजउपयोगी व्यक्तित्व तथा सफल नागरिक के रूप में दृष्टिगोचर होती है। सफल अधिगम किसी भी कठिन से कठिन परिस्थिति में जटिल समस्याओं के समाधान के रूप में सर्वेश्रेष्ठ प्रस्तुत होता है।

निम्न पंक्तियों में प्रो० सुरेश भटनागर द्वारा अधिगम के परिणाम को स्पष्ट किया गया है —

"चलते रहना गति है जीवन की, एक दूरी को कम करता है, दूसरा समृद्धि तथा सिद्धि के भण्डार को भरता है, चलना तथा चलाना, सीखना तथा सिखाना काल के अंग है। इन अंगों का भरपूर उपयोग ही शिक्षा है।"

"सीखते रहो, सीखने से अज्ञेय, ज्ञेय हो जाता है। ज्ञान के भण्डार में वृद्धि होती है, ज्ञान में वृद्धि, विकास के पथ को सरल करती है, शक्ति तथा समय की बचत करती है।"

"सीखना जीवन की सर्वोत्तम कला है। जो आप नहीं जानते उसे जानना सीखना है, उसे सीखना है उसे जीवन व्यवहार में लाना है। यह उपलब्धि है।"

"न जाने को जानना व जाने को सीखना, सीखकर अपनाना, अपनाकर दूसरों को सीखने के लिए प्रेरित करना जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि है। यही जीवन का अभिप्रेत है।"